सुपथ के लिए ज्ञान की आराधना करें : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, 28 मई।

युवाचार्य महाश्रमण ने श्रुत पंचमी के अवसर पर कहा कि ज्ञान एक नेत्र है। वह देख सकता है कौनसा पथ सम्यक है और कौनसा पथ असम्यक है। सुपथ की पहचान के लिए ज्ञान की आराधना करनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि ज्ञान का नेत्र उद्घाटित करने के लिए श्रुत की आराधना आवश्यक है। जो लोग भक्ति के साथ श्रुत की आराधना करते हैं वे वीतराग देव की आराधना करने के समान है। उन्होंने कहा कि जैन दर्शन में ज्ञान उसे कहा गया है जो राग से विराग की आरे ले जाता है। उस ज्ञान की आराधना करनी चाहिए जो आत्मा को पवित्र बनाता हो।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि दुनिया में राग चलता है, पर उसकी मात्रा अधिक होने पर वह दुःख बन जाता हे। इसलिए त्याग को समझना चाहिए। उन्होंने कहा कि भोग पर योग का अंकुश रहना चाहिए। प्रवृत्ति पर निवृत्ति का नियंत्रण होना चाहिए। मनोरंजन के साथ आत्म रमण भी होना चाहिए।

श्रुत पंचमी पर शुरू हुआ आगम मंथन

लाडनूं, 28 मई।

युवाचार्य महाश्रमण ने बताया कि आज श्रुत पंचमी के अवसर पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आगम शब्द कोष निर्वाण का दुरूह कार्य प्रारंभ किया है। इस आगम मंथन कार्य में अनेक शिष्य–शिष्याओं का श्रम नियोजित होगा। इस ग्रंथ को आचार्य तुलसी की जन्मशताब्दी वर्ष में जनता के हाथों में पहुंचाने का लक्ष्य है।

संस्कार निर्माण शिविर में प्रतियोगिताओं का आयोजन

लाडनूं, 28 मई।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित दस दिवसीय राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर में बालक–बालिकाओं के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। शिविर के संयोजक भूपेन्द्र मुथा ने बताया कि शिविर के दौरान आयोजित वाद–विवाद प्रतियोगिता, कहानी प्रतियोगिता, नाटक प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया जायेगा। उन्होंने कहा कि इन प्रतियोगिताओं से बालकों के भीतर संस्कारों का निर्माण होने के साथ विकास की राह प्रशस्त हुई है। उन्होंने कहा कि इस शिविर का समापन सत्र 30 मई को आयोजित होगा। जिसमें सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी का चयन कर सम्मानित किया जायेगा।

– अशोक सियोल

99829 03770